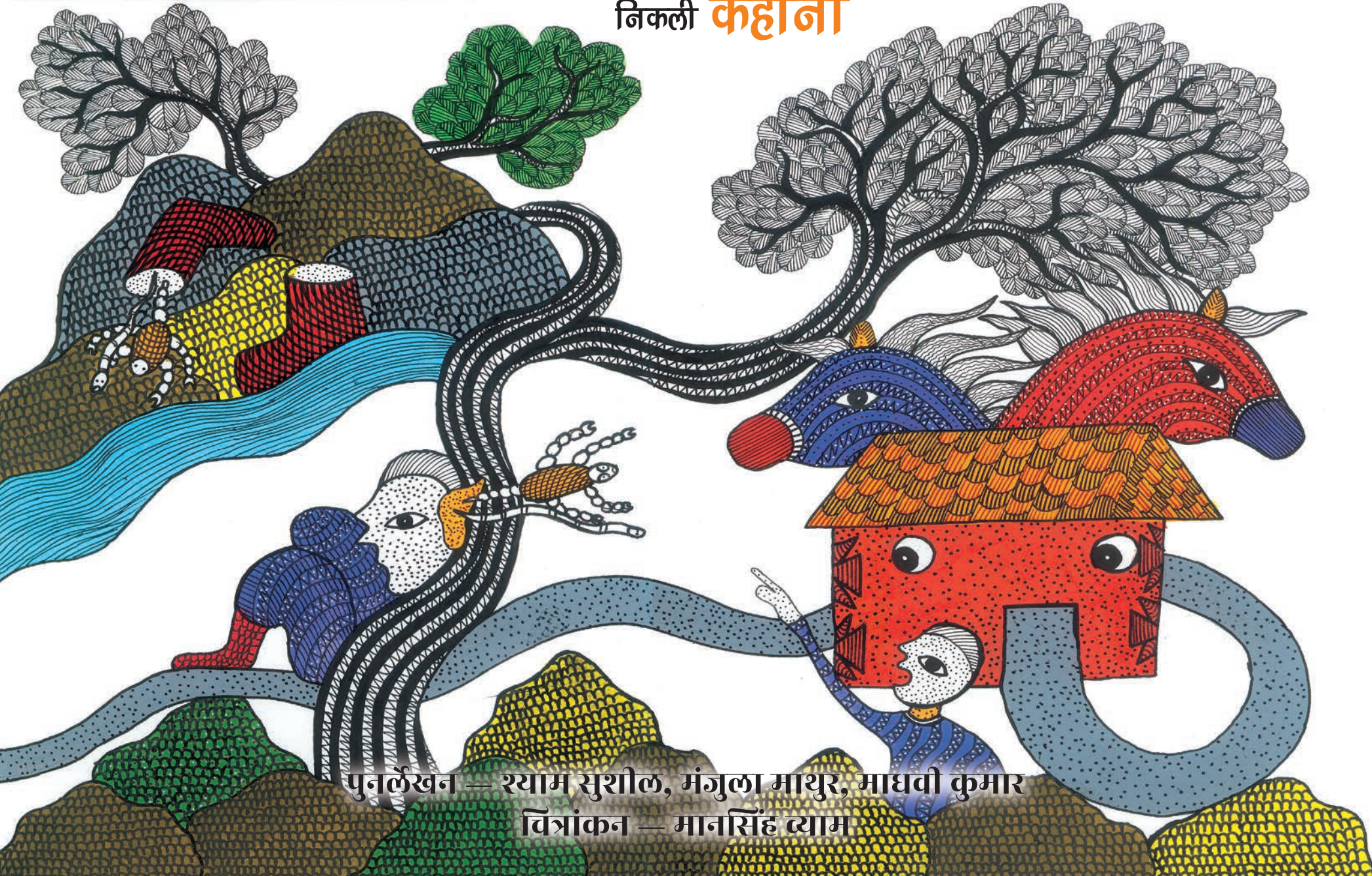


कान से निकली कहानी



पुनर्लेखन — श्याम सुशील, मंजुला माथुर, माधवी कुमार
चित्रांकन — मानसिंह व्याम

21211—कान से निकली कहानी

ISBN 978-93-5292-826-2

प्रथम संस्करण

जनवरी 2025 पौष 1946

PD 5T M

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण
परिषद्, 2025

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रचारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशन की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस, श्री अरविंद मार्ग
नई दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड, हेली एक्सटेंशन, होस्टेकेरे,
बनाशंकर III इस्टेज, बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन, डाकघर नवजीवन,
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस, निकट धनकल बस स्टॉप पिनहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स, मालीगाँव
गुवाहाटी 781021 फ़ोन : 0361-2676869

₹ 30.00

एन.सी.ई.आर.टी. वॉटरमार्क 100 जी.एस.एम. आर्ट पेपर
पर मुद्रित।

सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110016 द्वारा प्रकाशन
प्रभाग में प्रकाशित तथा बी.एम. ऑफ़सेट प्रिंटर, एच-37,
सेक्टर-63, नोएडा, उ.प्र.-201301 द्वारा मुद्रित।

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : एम. वी. श्रीनिवासन
मुख्य संपादक : विज्ञान सुतार
मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी) : जहान लाल
मुख्य व्यापार प्रबंधक : अमिताभ कुमार
सहायक संपादक : मीनाक्षी
सहायक उत्पादन अधिकारी : दीपक कुमार

आवरण एवं चित्रांकन

मानसिंह व्याम

ले आउट

डिजिटल एक्सप्रेस

सहयोग हेतु आभार ज्ञापन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) रचनाकारों, उनके परिजनों, संस्थानों या प्रकाशकों के प्रति आभारी है जिन्होंने अपनी रचनाओं को प्रकाशित करने की अनुमति प्रदान की।

परिषद्, रचनाकार, चित्रांकनकर्ता, एकलव्य, एकतारा संस्थाओं, अंजलि तिवारी, वेलफेयर अधिकारी, समाज कल्याण विभाग, दिल्ली; अयाज़ अहमद, डीटीपी ऑपरेटर, सीआईईटी, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; किरण, पूर्व जेपीएफ़, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; मोहम्मद आतिर, पूर्व ग्राफिक डिजाइनर, सीएनसीएल, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; योगेश प्रताप सिंह वर्मा, डीटीपी ऑपरेटर, सीएनसीएल, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; सीमा शर्मा, पूर्व वरिष्ठ परामर्शदाता, प्रारंभिक शिक्षा, विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; के प्रति भी आभार व्यक्त करती है।

परिषद्, पुस्तक को वर्तमान स्वरूप प्रदान करने हेतु प्रकाशन प्रभाग के सदस्यों पारुल त्यागी और शिव मोहन यादव, सहायक संपादक (संविदा); सुरेन्द्र कुमार, प्रभारी, डी.टी.पी. प्रकोष्ठ; मोहन सिंह, डी.टी.पी. ऑपरेटर (संविदा); के प्रति भी आभार व्यक्त करती है।

समीक्षा हेतु आभार ज्ञापन

अक्षय कुमार दीक्षित, मेंटर, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली; नीरा नारंग, आचार्य, शिक्षा संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; प्राची कालरा, सहायक आचार्य, गार्गी कॉलेज, नई दिल्ली; मालविका राय, शिक्षाविद्, नई दिल्ली; मुकुल प्रियदर्शिनी, सह-आचार्य (सेवानिवृत्त), मिरांडा हाउस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; वर्षा सिंघल, शिक्षिका, केंद्रीय विद्यालय, कोकराझार, असम; श्वेता उप्पल, पूर्व मुख्य संपादक, प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; संध्या सिंह, आचार्य, भाषा शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली; सोनिका कौशिक, सहायक आचार्य, जीसस एंड मैरी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली; स्नेहा सबनिस, अनुवादक, राजभाषा संचालनालय, गोवा सरकार।

कहानियाँ बच्चों को पढ़ने का आनंद देती हैं और साथ ही कुशल बुद्धि, समस्या समाधान एवं तार्किक विश्लेषण की क्षमता का संवर्धन भी करती हैं। फाउंडेशनल और प्रीप्रेटरी स्टेज के बच्चों एवं शिक्षकों के लिए कहानियाँ भाषायी कौशलों एवं आस-पास मौजूद विभिन्न अवधारणाओं को सीखने में भी सहायता करेंगी। कहानियों में आए चित्र बच्चों को अनुमान लगाकर पढ़ने और उन्हें अपने अनुभव संसार से जोड़ते हुए अपनी बात कहने का अवसर तथा आत्मविश्वास भी देते हैं। किसी कहानी का कोई पात्र या घटना बच्चों के जीवन एवं चिंतन को प्रभावित भी कर सकता है और बच्चे उनके साथ तादात्म्य भी स्थापित कर सकते हैं। पढ़ी गई कहानी को अपनी कल्पना के आधार पर आगे बढ़ाने, अपनी कहानी स्वयं रचने का अवसर भी उपलब्ध होंगे। कहानियाँ बच्चों को स्वतंत्र पाठक और सृजनशील लेखक बनने में सहायता करेंगी।

उषा शर्मा

आचार्य एवं कार्यक्रम समन्वयक
प्रारंभिक शिक्षा विभाग,
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

कान से निकली कहानी

दो दोस्तों की कहानी कान से निकली है...



पुनर्लेखन — श्याम सुशील, मंजुला माथुर, माधवी कुमार
चित्रांकन — मानसिंह व्याम



राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

एक गाँव में काँय और तरनुआ दो बहुत अच्छे दोस्त रहते थे। एक बार काँय ने तरनुआ से कहा —“मितान* चलो, हम कहीं घूमने चलते हैं। घर ही घर में अब अच्छा नहीं लग रहा।” तो तरनुआ बोला—“चलो ठीक है।”

वे दोनों अपने-अपने घोड़े पर बैठकर चल दिए। चलते-चलते वे एक घने जंगल में पहुँच गए। रात हो गई तो काँय तरनुआ से बोला— “मितान, रात हो गई है और कुछ दिखाई भी नहीं दे रहा है, इसलिए हम यहीं रुक जाते हैं। रात में यहीं आराम करके कल सुबह आगे निकल जाएँगे।”

* मितान – मित्र, दोस्त





तो तरनुआ बोला —“ठीक है।” दोनों रात में वहीं एक पेड़ के नीचे रुक गए और घर से जो भी खाना लेकर चले थे, उसे खाकर आराम करने लगे।

तरनुआ काँय से बोला —“मितान, अब तुम मुझे कहानी सुनाओ।” लेकिन काँय सो गया। उसे तीन कहानियाँ आती थीं। तो वे तीनों कहानियाँ उसके कान से निकलकर आपस में बातें करने लगीं — “इसे कहानी तो आती है पर ये हम कहानियों को बाहर निकलने नहीं दे रहा और न ही किसी को कहानी बता रहा है।”



तरनुआ को नींद नहीं आ रही थी। वह उन कहानियों की बातों को सुन रहा था।

पहली कहानी कह रही थी —“मैं मेंढक बनकर इसके जूते के अंदर चली जाऊँगी और जब यह जूता पहनेगा तो इसे डरा दूँगी।” दूसरी कहानी बोली —“यह जैसे ही नदी में घुसेगा तो मैं बाढ़ बनकर इसे बहा ले जाऊँगी।” तीसरी बोली —“मैं सेमल का पेड़ बनूँगी और जब यह मेरे पेड़ के नीचे आएगा तो मैं अपनी डाली नीचे गिराकर इसका रास्ता रोक दूँगी।”





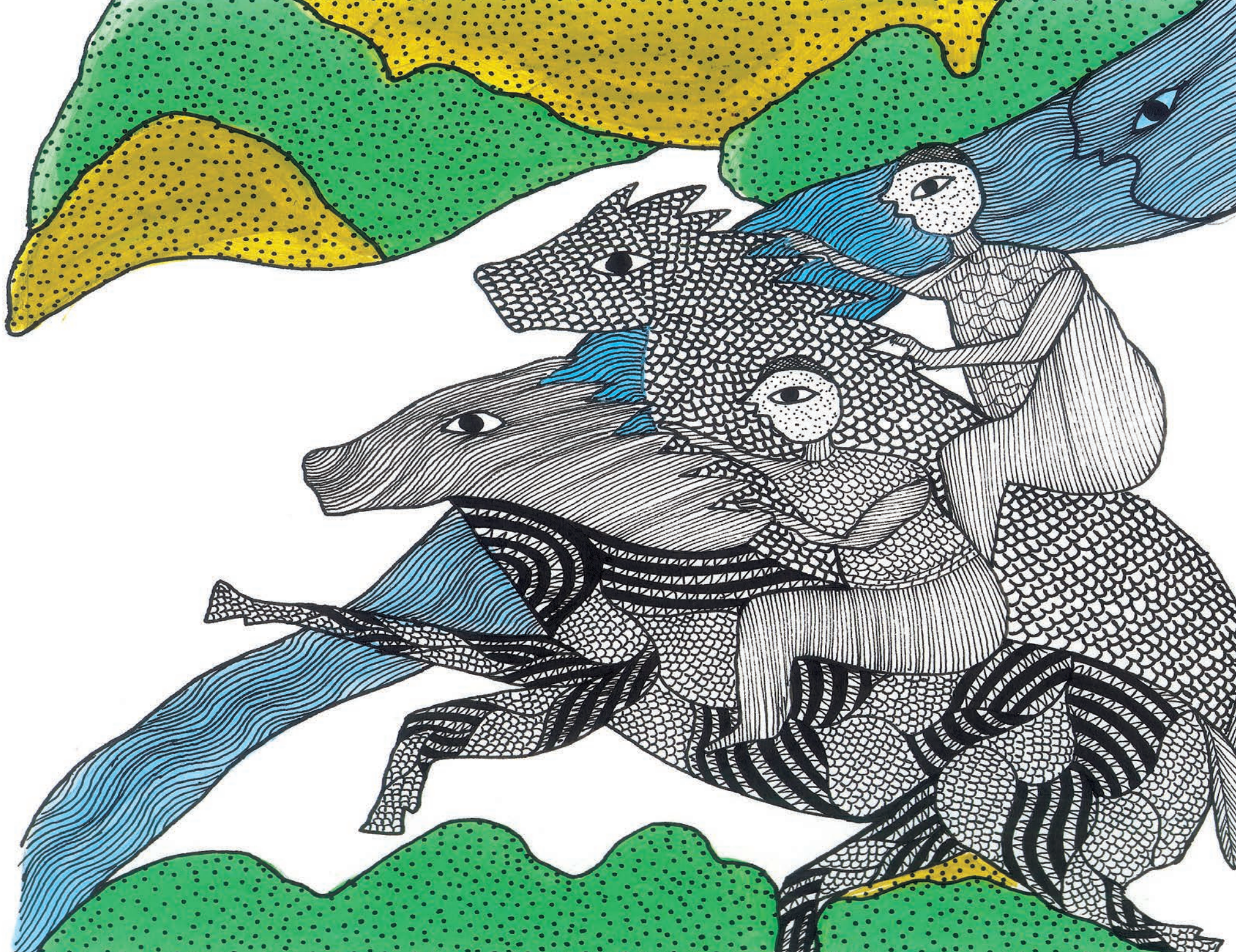
तीनों कहानियों की बातें तरनुआ सुन रहा था। जब सुबह हुई तो वे दोनों उठे और जाने के लिए तैयार हुए। काँय जैसे ही जूता पहनने लगा तो तरनुआ बोला —“मितान, जूते को अच्छे से ठोककर पहनना।” जब काँय ने जूते को ठोका तो उसमें से मेंढक उछलकर भागा। काँय एकदम से डर गया। तीनों कहानियाँ खिलखिलाकर हँस पड़ीं।





तरनुआ और काँय अपने-अपने घोड़े पर बैठकर आगे चल दिए। जब वे नदी के पास पहुँचे तो तरनुआ बोला —“मितान, तुम अपने घोड़े को तेज़ी से दौड़ाकर नदी पार कर लो।” काँय ने ऐसा ही किया। जैसे ही उसने पलटकर देखा तो नदी में तेज़ बाढ़ आ चुकी थी। वह डर गया। तीनों कहानियाँ खिलखिलाकर हँस पड़ीं।





काँय ने तरनुआ की ओर देखा और कहा —
“मितान, तुमने मुझे बचा लिया।”

तरनुआ और काँय आगे बढ़े और जब वे सेमल के पेड़ के पास पहुँचे तो तरनुआ बोला —“मितान तुम अपने घोड़े को तेज़ी से दौड़ाओ।” काँय ने ऐसा ही किया और जब पीछे मुड़कर देखा तो पेड़ की एक डाल टूटकर तभी-तभी नीचे गिरी थी। तीनों कहानियाँ फिर खिलखिलाकर हँस पड़ीं।



काँय अपने दोस्त से बोला —“मितान, तुम यह सब कैसे जानते हो?”

तो तरनुआ बोला— “अरे, हम क्या नहीं जानते। हम सब कुछ जानते हैं।”

तरनुआ की बात सुनकर तीनों कहानियों का सिर चकरा गया।

काँय ने भी मन ही मन कहा, “गज़ब है हमारा मितान, सब कुछ जानता है।”



पुनर्लेखन



श्याम सुशील

दिल्ली में रहने वाले श्याम सुशील ने लंबे समय तक दैनिक हिन्दुस्तान के बाल पृष्ठ 'नटखट दुनिया' का संपादन किया है। दूरदर्शन के साहित्यिक कार्यक्रम 'सृजन', 'फलक' और 'किताब की दुनिया' के लिए 50 से अधिक साहित्यकारों के रचनात्मक जीवन और कृतित्व पर उन्होंने शोध कार्य किया। उन्होंने बच्चों के साथ मिलकर 'चकमक क्लब' का गठन और हस्तलिखित बाल पत्रिका नन्ही कलम का संपादन-प्रकाशन किया। रविवारी जनसत्ता, चकमक, फिरकी बच्चों की, प्लूटो, साइकिल सहित अनेक पत्र-पत्रिकाओं में उनकी अनेक रचनाएँ प्रकाशित हैं। आओ बादल, आबू-साबू, ठाँव-ठाँव घूमा, चार चींटियाँ, आलू भालू चाँद समन्दर, बकरी के साथ, टाउल टापुल पुस्तकें और बहुत से कविता-पोस्टर भी प्रकाशित हैं।

पुनर्लेखन

मंजुला माथुर

मंजुला माथुर वर्ष 2013 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) से आचार्य के पद से सेवानिवृत्त हुई। वह रीडिंग डेवलपमेंट सेल (रा.शै.अ.प्र.प.) की अध्यक्ष रही हैं। नेशनल बुक ट्रस्ट में राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र और पाठक मंच की परिकल्पना, योजना और स्थापना में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मंजुला माथुर वंडर पार्क स्कूल फाउंडेशन नामक संस्था की संस्थापक हैं। सेवानिवृत्त होने के बाद भी वे रा.शै.अ.प्र.प. के कई कार्यक्रमों के साथ जुड़ी रहीं हैं। प्रारंभिक स्तर पर पढ़ना-लिखना, भाषा शिक्षण और बाल साहित्य के क्षेत्र में उनका अमूल्य योगदान रहा है। आचार्य मंजुला माथुर ने शिक्षकों के लिए भाषा शिक्षण-प्रशिक्षण के लिए कई शैक्षिक ऑडियो-विडियो कार्यक्रमों का भी निर्माण किया है।



पुनर्लेखन



माधवी कुमार

माधवी कुमार वर्ष 2009 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) से सहायक प्रोफेसर के पद से सेवानिवृत्त हुईं। इन्होंने प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों और अध्यापकों के लिए शैक्षिक दूरदर्शन और रेडियो के लिए 400 से भी अधिक मीडिया का आलेखन किया है। राष्ट्रीय स्तर के वीडियो फेस्टिवल में माधवी कुमार अनेक कार्यक्रम सम्मानित हुए हैं। एन.एच.के. (जापान) फेस्टिवल में वीडियो 'रोज़ बदलता कैसे चाँद' के गीत लेखन के लिए भी माधवी कुमार को सम्मानित किया गया। माधवी कुमार नेशनल बुक ट्रस्ट के बाल साहित्य केंद्र में एक वर्ष के लिए बतौर संपादक भी कार्य किया है।

चित्रांकन

मानसिंह व्याम

भोपाल के रहने वाले मानसिंह व्याम गोंड लोक शैली में पिछले 10 वर्षों से चित्रकारी कर रहे हैं। उन्होंने गोंड कला अपने माता-पिता से सीखी, जो स्वयं भी गोंड शैली के कलाकार हैं। मानसिंह भारत के साथ-साथ जापान, फ्रांस, जर्मनी जैसे देशों में अनेक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय परियोजनाओं और प्रदर्शनियों में भाग ले चुके हैं। कलाकार के तौर पर मान सिंह ने इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय, मध्य प्रदेश और मध्य प्रदेश जन-जातीय संग्रहालय में काम किया है। इन्होंने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) जैसे प्रकाशनों के साथ पत्रिकाओं व किताबों के लिए चित्रांकन किया है। मानसिंह व्याम अपनी सधी हुई बारीक रेखाओं के लिए जाने जाते हैं।

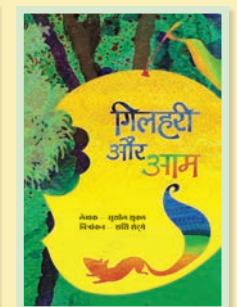
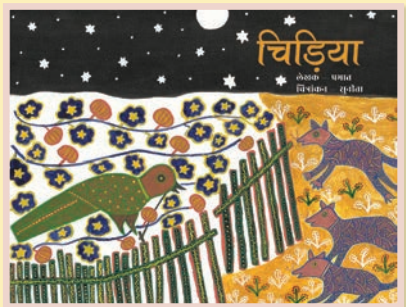
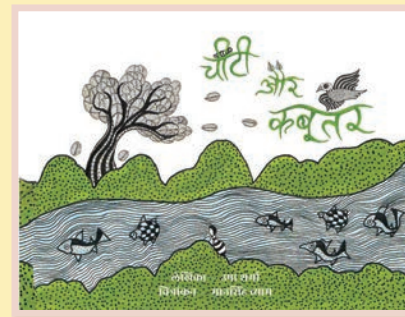
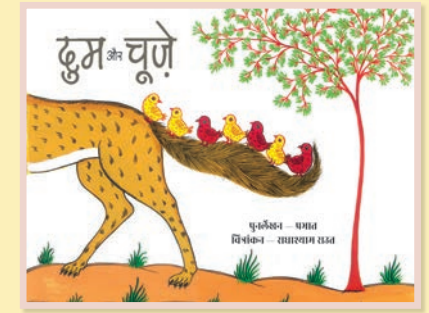
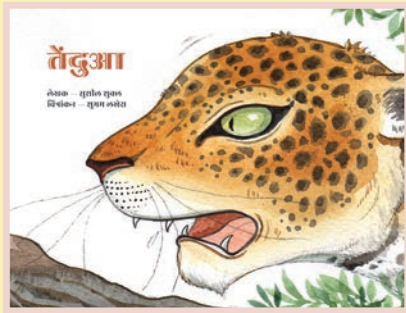


अपनी कहानी लिखिए





और भी हैं मजेदार कहानियाँ...



असंख्य वृत्तांत प्राप्त करने
के लिए स्कैन एवं डाउनलोड करें
राष्ट्रीय ई-पुस्तकालय -
आपका डिजिटल पुस्तकालय!



21211

विद्यया ऽ मृतमश्नुते



एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

ISBN 978-93-5292-826-2